UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 293- 296

''मध्यप्रदेश वित्त निगम का औद्योगिक क्षैत्र के विकास का अध्ययन''

डॉ. सचिन शर्मा
प्राचार्य, संस्कार कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज धार रोड, इन्दौर (म.प्र.)

सतीश जायसवाल
पी–एच.डी. रिसर्च स्कॉलर (वाणिज्य), संस्कार कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज धार रोड, इन्दौर (म.प्र.)

सारांश –
किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का उत्तम साधन औद्योगीकरण है। औद्योगिक क्षैत्र के प्रारूप से लेकर उसके क्रियान्वित होने तक वित्त अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मध्य प्रदेश वित्त निगम औद्योगिक क्षैत्र के विकास की अपने स्वरूप की ऐतिहासिक पहल है। इस निगम की स्थापना का मुख्य उद्देश्य मध्यम एवं लघु उद्योगों को वित्तीय सहायता प्रदान कर राज्य का औद्योगिक उत्पादन बढ़ाना है, जिससे कि क्षैत्रीय विकास के साथ ही साथ देश के औद्योगिक क्षेत्रों का भी विकास हो सके। सरकार ने वित्त निगम की सहायता से औद्योगिक क्षेत्रों के उत्थान में अभिनव प्रयास किये जा रहे है। अतः मध्यप्रदेश सरकार निगम के माध्यम से जारी प्रदत्त सुविधाओं का लाभ उठाकर औद्योगिक क्षेत्रों का आर्थिक उत्थान कर एक बड़े क्षेत्रों को देश की मुख्य धारा से जोड़कर देश का समुचित विकास किया जा रहा है।
की–वर्ड्स *:– मध्यप्रदेश, वित्त निगम, औद्योगिक क्षेत्र, ऋण, इकाईयाँ*

प्रस्तावना :–

औद्योगीकरण आधुनिक युग की उत्तरोत्तर माँग है। कोई भी देश अपने देशवासियों का उच्च जीवनस्तर औद्योगिक क्षेत्रों के विकास द्वारा प्राप्त कर सकते है और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी आर्थिक मजबुती को सुदृढ़ कर सकते है। वित्त वह शक्तिशाली साधन है, जो विभिन्न आर्थिक गतिविधियों को एक सुत्र में बाँधकर इन्हें निर्देशित एवं संचालित कर सकता है। इसलिए वित्त आधुनिक औद्योगिक विकास की आधारशिला है। मध्यप्रदेश वित्त निगम का कार्यक्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। वित्त निगम एकांकी व्यापारी, साझेदारी, संयुक्त हिन्दु परिवार, सहकारी समितियां और सार्वजनिक समितियों को ऋण प्रदान कर रहा है। चाहे इनके द्वारा व्यापार छोटे या बड़े पैमाने पर स्थापित किया जाए।

मध्यप्रदेश वित्त निगम ने औद्योगिक क्षेत्रों के विकास में ऋण प्राप्त करके अपनी बहुमूल्य भूमिका को प्रदर्शित किया है, जिससे मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास को बल मिल रहा है। देश की आर्थिक प्रगति वित्त पूर्ति के साधनों पर निर्भर होता है। यदि वित्त प्रबंधन की उचित व्यवस्था न होने के कारण औद्योगिक क्षेत्रों के विकास की योजनाऐं असफल एवं बेकार हो जाती है। इसलिए उद्योगों की स्थापना के लिए वित्त की आवश्यकता होती है।

उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य मध्यप्रदेश वित्त निगम का औद्योगिक क्षेत्र के विकास का अध्ययन करना है। इसके मुख्य उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु सहायक उद्देश्य निम्न है :–

1. म.प्र. वित्त निगम औद्योगिक क्षेत्रों को वित्त सहायता प्रदान करता है।
2. म.प्र. वित्त निगम के द्वारा विभिन्न औद्योगिक इकाईयों को दी जाने वाली ऋण का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पना :–

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 293- 296

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है :–

1. मध्यप्रदेश वित्त निगम ने औद्योगिक क्षेत्रों को वित्त प्रदान करने में सहायक है।

अध्ययन की शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध पत्र मध्यप्रदेश वित्त निगम का औद्योगिक क्षेत्र के विकास का अध्ययन करने के लिए प्रमुखतः द्वितीय संमकों का उपयोग किया गया है जिसके अन्तर्गत मेरे द्वारा मध्यप्रदेश वित्त निगम की वार्षिक पत्रिकाऐं, औद्योगिक विकास एवं वित्त से संबंधित पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाओं के लेख एवं वेबसाईट्स आदि की सहायता ली गई है।

मध्यप्रदेश वित्त निगम :–

28 सितम्बर 1951 को भारतीय संसद ने राज्य वित्त अधिनियम पास किया जिसके अनुसार विभिन्न राज्यों को अपने–अपने राज्य में वित्त निगम स्थापित करने का अधिकार प्रदान किया। इस अधिनियम की अधिकांश धाराऐं औद्योगिक वित्त निगम से मिलती जुलती है। मध्यप्रदेश बनने के पूर्व राज्य वित्त निगम अधिनियम 1951 के अन्तर्गत मध्य भारत वित्त निगम की स्थापना 30 जून 1955 को की गई थी। 1 नवम्बर 1956 को नये मध्यप्रदेश राज्य की स्थापना होने पर निगम का कार्यक्षेत्र पूरे मध्यप्रदेश में कर दिया गया था और इसी के साथ निगम का नाम बदलकर मध्यप्रदेश वित्त निगम रखा गया, वित्त निगम का प्रधान कार्यालय इन्दौर में स्थित है। वित्त निगम द्वारा प्रत्येक संभाग में शाखा कार्यालय स्थापित किए गए है, ताकि औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना और विकास के लिए वित्त व्यवस्था की जा सके।

उपरोक्त के अतिरिक्त वित्त निगम के निम्न कार्य करना है :–

1. निगम उन व्यक्तियों, फर्मो, सहकारी समितियों, संयुक्त हिन्दु परिवार, निजी और सार्वजनिक समिति, कम्पनियों इत्यादि को वित्त सहायता प्रदान करता है।
2. वित्त निगम उद्योगों से संबंधित संस्थाओं के लिए ग्यारन्टी भी देता है।
3. निगम सार्वजनिक कम्पनी के अंशों का अभिगोपन भी कर सकता है, परन्तु किसी कम्पनी के अंश एवं स्कन्ध सीधें नहीं खरीद सकता है।
4. देश में क्रय की गई मशीनरी पर वित्त निगम डेफर्ड पेमेंट की ग्यारन्टी देने के लिए भी अधिकृत है।
5. ऋण पत्रों का भी अभिगोपन करती है, किन्तु ऐसे ऋण पत्र कम्पनियों को 7 वर्षों में निगम को विक्रय भी करना होता है।
6. वित्त निगम केन्द्रीय, राज्य सरकार तथा औद्योगिक वित्त निगम के अभिकर्ता के रूप में भी कार्य करता है।

उद्योगवार स्वीकृत ऋणों की स्थितिः–

(राशि करोड़ में)

विवरण	संख्या	राशि	प्रतिशत
व्यावसायिक अधोसंरचना विकास	38	117.98	29.24
मशीनरी एवं कलपुर्जे	18	49.83	12.35
खाद्य प्रसंस्करण	17	42.72	10.59
प्लास्टिक एवं पैकेजिंग	16	26.85	6.65
सेवा क्षेत्र	93	22.63	5.60
होटल एवं रेस्टारेन्ट	11	19.70	4.88
पेपर एवं पेपर उत्पाद	10	18.60	4.61
रसायन आधारित उद्योग	4	16.85	4.18
कॉटन एवं टेक्सटाईल	1	16.00	3.96

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 293- 296

लोह एवं स्टील उत्पाद	5	15.35	3.80
शीत गृह एवं भण्डार गृह	17	11.54	2.86
अस्पताल एवं नर्सिंग होम	2	9.75	2.40
उत्खनन उद्योग	2	7.50	1.86
इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण	6	5.96	1.48
रबर एवं रबर उत्पाद	3	4.88	1.21
ड्रग्स एवं फार्मास्यूटिकल्स	5	3.83	0.96
तैयार पोषाख	4	2.25	0.56
लकड़ी उत्पाद	3	1.85	0.46
अन्य उद्योग	17	9.46	2.34
कुल	**272**	**403.53**	**100**

स्त्रोत – मध्यप्रदेश वित्त निगम की वार्षिक प्रतिवेदन 2013–14

उपर्युक्त तालिका का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है, कि मध्यप्रदेश वित्त निगम द्वारा वर्ष 2013–14 में 272 इकाईयों को ऋण स्वीकृत किया गया है, स्वीकृत ऋण राशि 403.53 रू. करोड़ है। इन राशि में से सबसे ज्यादा स्वीकृत इकाईयाँ 38 व्यावसायिक अधोसंरचना विकास से सम्बन्धित 117.98 रू. करोड़ किये गये जो सम्पूर्ण स्वीकृत राशि के 24.24 प्रतिशत है। सबसे कम लकड़ी उत्पाद की 3 इकाईयों में 1.85 रू. करोड़ है अर्थात् 0.46 प्रतिशत है। इस प्रकार निगम के व्यवसाय विकास केन्द्रों ने निगम के व्यवसाय में वर्ष 2013–14 में भी संतोषजनक योगदान दिया जा रहा है।

क्षेत्रवार स्वीकृति एवं वितरण ऋण की स्थितिः–

(राशि करोड़ में)

क्रं.	क्षेत्र	ऋण स्वीकृति			ऋण विरण		
		संख्या	राशि	प्रतिशत	संख्या	राशि	प्रतिशत
1	सूक्ष्म उद्यम						
	उद्योग क्षेत्र	20	3.95	0.98	13	2.05	0.71
	सेवा क्षेत्र	93	20.73	5.13	132	22.69	7.88
2	लघु उद्यम						
	उद्योग क्षेत्र	81	140.98	34.94	88	84.89	29.50
	सेवा क्षेत्र	29	37.89	9.39.	32	19.39	6.74
3	मध्यम उद्यम						
	उद्योग क्षेत्र	07	26.00	6.44	26	48.52	16.86
	सेवा क्षेत्र	01	5.00	1.24	03	9.44	3.28
4	वृहद उद्यम						
	उद्योग क्षेत्र	03	51.00	12.64	05	14.89	5.17
	सेवा क्षेत्र	0	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
5	व्यवसायिक अधोसंरचना विकास (कर्मशियल रियल इस्टेट	38	117.98	29.24	66	85.92	29.86
	कुल	**272**	**403.53**	**100**	**365**	**287.79**	**100**

स्त्रोत – मध्यप्रदेश वित्त निगम की वार्षिक प्रतिवेदन 2013–14

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि मध्यप्रदेश वित्त निगम की स्थापना के पश्चात् से औद्योगिक क्षेत्रों के विकास की स्थापना बड़ी जा रही है। वर्ष 2013–14 में वित्त निगम द्वारा कुल 272 इकाईयों की ऋण स्वीकृति का एक बड़ा हिस्सा लघु एवं मध्यम क्षेत्र की इकाईयों को किया गया है। वर्ष 2013–14 में वित्त निगम द्वारा 287.79 रू. करोड़ के ऋण वितरित किए गए जो निगम द्वारा 403.53 रू. करोड़ की ऋण स्वीकृति में से 234.

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 293- 296

55 रू. करोड़ लघु एवं मध्यम क्षेत्र के उद्यमों को स्वीकृत किए गए जो कुल स्वीकृति का 58.12 प्रतिशत है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि राज्य के पिछड़े क्षेत्रों में 213.69 रू. करोड़ के ऋण स्वीकृत किये गये जो कुल स्वीकृति का 52.96 प्रतिशत है और यह भी ज्ञात हुआ कि 2013–14 में वित्त निगम द्वारा अपने ऋण संविभाग से 226.58 करोड़ राशि की वसूली की गई। इसलिए अध्ययन से ज्ञात होता है, कि औद्योगिक क्षेत्रों के विकास में वित्त निगम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह पता चलता है, कि मध्यप्रदेश वित्त निगम का औद्योगिक क्षेत्र के विकास का वातावरण निर्मित करने में शासन एवं निगम के सभी अधिकारी व कर्मचारी कृत संकल्पित है। नये औद्योगिक इकाईयों को स्थापित व विकास के लिए वित्त निगम विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ शासन स्तर पर उपलब्ध करायी जा रही है। म.प्र. वित्त निगम अपने आप में कई विभागों को समेटे हुए, एक विशाल संगठन के रूप में सम्पूर्ण मध्यप्रदेश राज्य के व्यावसायिक व औद्योगिक क्षेत्रों पर धन वर्षा कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कई बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त हो रहा है। वित्त निगम वितरण के साथ ही अपने पुराने बकाया ऋणों की भी वसूली तेजी से कर रहा है। निगम द्वारा ऐसी इकाईयों जो, कि पुर्नजीवित होने योग्य है उन्हें अतिरिक्त ऋण देकर भी तकनीकी सहायता दे रहा है। इससे औद्योगिक क्षेत्रों का विकास होने के साथ ही ऋण वापसी की संभावना भी बढ़ जाती है। निगम द्वारा बेरोजगार व्यक्तियों एवं कुशल कारीगारों को विशेष रियायती शर्तों पर वित्तीय सहायता प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। अतः वित्त निगम और सरकार द्वारा औद्योगिक क्षेत्रों के विकास हेतु ओर अधिक सकारात्मक नीति अपनाना चाहिए, जिसे औद्योगिक क्षेत्रों को ओर अधिक स्थापित करके विकास किया जा सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. बासू, दी चेंजिग स्ट्रक्चर ऑफ इण्डस्ट्रीयल फायनेंस इन इण्डिया, दी इम्पेक्ट ऑफ इंस्टीट्युशनल फायनेंस, 1969
2. भोले, एल.एम. ''फाईनेंशियल इंस्टिट्यूशंस एण्ड मार्केट्स टाटा मेक्ग्रा हिल्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007
3. दुबे दी रोल एण्ड इम्पेक्ट ऑफ मध्यप्रदेश फायनेंस कार्पोरेशन इन इण्डस्ट्रीयल डेवलपमेंट ऑफ देवास, अप्रकाशित शोध प्रबंध 1988
4. दत्त, रूद्र एवं सुन्दरम के.पी.एम. ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' एस. चन्द एण्ड कम्पनी प्रा.लि. नई दिल्ली 2009
5. गुप्ता, डॉ. रमाकांत ''बैंकिंग चिंतन–अनुचिंतन (व्यवसायिक जर्नल) प्रकाशित मयूर ट्रेडिंग कार्पोरेशन, मुम्बई 2011
6. जैन पुखराज ''मध्यप्रदेश एण्ड अध्ययन'' साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा 2001
7. मध्यप्रदेश वित्त निगम की वार्षिक प्रतिवेदन 2013–14
8. नायक प्रो. शशि, मध्यप्रदेश का आर्थिक विकास, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2003

समाचार पत्र एवं पत्रिका :–

- नईदुनिया, दैनिक भास्कर, बिजनेस स्टेण्डर्ड, इकॉनामिक टाईम्स, प्रतियोगिता दर्पण, योजना कुरूक्षेत्र।

वेबसाईट्सः–

1- www.mpfc.org
2- www.indorebank.org
3- www.msme.gov.in
4. www.smallindusitryindia.com